B.Ed-ll

Biological Science **Nakul Sah**

Course- 7(b) **Assistant Professor**

Lecture – 9

Demonstration method of teaching Biological Science

जीवविज्ञान शिक्षण की प्रदर्शन विधि

प्रदर्शन अर्थात सामने प्रत्यक्ष रूप से दिखाना। इस विधि मे शिक्षक वस्तु का प्रदर्शन करते हुए उसकी व्याख्या करने के लिए व्याख्यान की सहायता भी ले सकता है, इस इसी कारण भाषाणयुक्त प्रदर्शन विधि या व्याख्यान–प्रदर्शन विधि भी कह सकत है। शिक्षक कक्षा के सामने प्रयोग करके दिखाता है एव ंपाठ्य–वस्तु स`सम्बन्धित वस्तु का प्रदर्शन करता है और आवश्यकता अनुसार अन्तःक्रिया करना जाता है और पाठ्यवस्तु को आगे बढ़ाता है। यह विधि कक्षा मे ंअधिगम के सैद्धान्तिक एव ंप्रायोगिक कौशलां`पर जोर देती है। इस विधि मे ं व्याख्यान एवं प्रदर्शन दोनों के गुण सम्मिलित हो जाते है जिससे सैद्धान्तिक तथ्यो ं को प्रायोगिक रूप से प्रदर्शित कर विद्यार्थियो ंको लाभ मिल जाता है। इस विधि द्वारा प्रभावशाली शिक्षण कराया जा सकता है, यदि निम्न बातों का ध्यान रखा जाए :–

★ जिस भी प्रकरण को पढ़ाना है उसमे ंजिस सामग्री का प्रदर्शन करना है उस`पहले से नियोजित कर लेना चाहिए।

★ प्रदर्शन के उद्देश्य और लक्ष्य शिक्षक के मस्तिष्क में विद्यमान होना चाहिए।

★ प्रदर्शन से पहले यह निश्चित कर ले कि सभी विद्यार्थियों को अवलोकन करने में सरलता हो।
★ प्रदर्शन से पहले सम्बन्धित निर्देश कक्षा में शिक्षक द्वारा दिए जाए।ं

★ प्रदर्शन बच्चों के सम्मुख करने स`पहले शिक्षक यह पहले स्वयं प्रदर्शन करक`संतुष्ट होना चाहिए कि प्रदर्शन की सामग्री ठीक है।

★ प्रदर्शन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री को क्रमवार व्यवस्थित रख लेना चाहिए।

★ जो प्रदर्शन सामग्री उपयोग मे ंलाए वह विद्यार्थियों की आयु और मानसिक स्तर के अनुकूल हो।

★ प्रदर्शन मे ंप्रयुक्त सामग्री का आकार इतना बडा़ हो कि बच्चो ंको देखने म ंपरेशानी न हो।

★प्रदर्शन के साथ हमेशा श्यामपट्ट में सम्बन्धित तथ्य और सिद्धांत लिखकर समझाने की व्यवस्था होनी चाहिए।

★ प्रदर्शन के समय कक्षा में उपयुक्त प्रकाश और हवा की व्यवस्था होनी चाहिए।

★ प्रदर्शन की गति न अधिक हो न ही बहुत धीमी होनी चाहिए।

★ प्रदर्शन करने के पश्चात बच्चों को रिकार्ड बनाने के लिए समय देना चाहिए।

शिक्षण मे ंप्रदर्शन विधि के गुण एव ंउपयोग :

★ यह विधि शिक्षक को वांछित दिशा मे ंअधिगम को कराने मे ंसहायता करती है।

★ यह विधि मनोवैज्ञानिक है क्योकि विद्यार्थियो ंके समक्ष मूर्त वस्तु लायी जाती है। इस तरह यह किसी गलत दिशा मे ंनहीं जाते। इस तरह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया मे ंसक्रिय रूप से भाग लेते है।

★ सक्रिय रहने से विद्यार्थियों में रूचि और उत्साह बना रहता है।

★ अनुशासन भी कक्षा में बन जाता है।

★ यह विधि समय और धन दोनों की बचत करती है।

प्रदर्शन विधि की सीमाएं :

प्रदर्शन विधि द्वारा विज्ञान शिक्षण की सभी समस्याए ंदूर नहीं हो सकती। अतः इस विधि की सीमाएं इस प्रकार है

★ ''स्वय ंकरके सीखना'' शिक्षण सत्रू है, यही अधिगम का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है, परन्तु इस विधि में इसका कोई स्थान नहीं है।

★ इसमें विद्यार्थियो ंको स्वयं प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलता। विद्यार्थी शिक्षक का` केवल देखते ही है।

★दयदि शिक्षक कुशल नहीं है तो प्रदर्शन ठीक से कक्षा मे ंसम्भव नहीं हो पाता।

★ जहाँ विद्यार्थियो ंकी संख्या अधिक होती है वहाँ इस विधि स`शिक्षण कठिन हो जाता है।

★ सभी विद्यार्थी इस विधि स`लाभ नहीं ले पाते।

★ व्याख्यान–प्रदर्शन विधि यदि गति से है तो सभी इसका लाभ नहीं ले पाते।